काका कालेलकर

(1885 - 1982)

काका कालेलकर का जन्म महाराष्ट्र के सतारा नगर में सन् 1885 में हुआ। काका की मातृभाषा मराठी थी। उन्हें गुजराती, हिंदी, बांग्ला और अंग्रेज़ी का भी अच्छा ज्ञान था। गांधीजी के साथ राष्ट्रभाषा प्रचार में जुड़ने के बाद काका हिंदी में लेखन करने लगे। आज़ादी के बाद काका जीवनभर गांधीजी के विचार और साहित्य के प्रचार-प्रसार में जुटे रहे।

महात्मा गांधी के अनन्य अनुयायियों में विनोबा भावे, सीमांत गांधी अब्दुल गफ़्फ़ार खाँ और काका कालेलकर समान रूप से याद किए जाते हैं। नयी दिल्ली में गांधी संग्रहालय के निकट सन्निधि में काका के जीवन से जुड़ी बहुत-सी वस्तुएँ और उनका साहित्य आज भी देखा जा सकता है।

देश के प्रायः कोने-कोने में यायावर की तरह भ्रमण करने वाले काका की चर्चित कृतियाँ हैं : *हिमालयनो प्रवास, लोकमाता* (यात्रा वृत्तांत), *स्मरण यात्रा* (संस्मरण), *धर्मोदय* (आत्मचरित), *जीवननो आनंद, अवारनवार* (निबंध संग्रह)। काका ने कई वर्षों तक *मंगल प्रभात* पत्र का संपादन भी किया।

काका के लेखन की भाषा सरल, सरस, ओजस्वी और सारगर्भित है। विचारपूर्ण निबंध हो या यात्रा संस्मरण, सभी विषयों की तर्कपूर्ण व्याख्या काका की लेखन शैली की विशेषता रही है।

एक हिंदीतर भाषी लेखक द्वारा मूलतः हिंदी में लिखे इस ललित निबंध *कीचड़ का काव्य* में काका ने कीचड़ की उपयोगिता का काव्यात्मक शैली में बखान किया है। काका कहते हैं कि हमें कीचड़ के गंदेपन पर नहीं, अपितु उसकी मानव और पशुओं तक के जीवन में उपयोगिता पर ध्यान देना चाहिए। उत्तर-पूर्वी राज्यों में सबसे ज़्यादा पैदा होनेवाली धान की फसल कीचड़ में ही उग पाती है। कीचड़ न होता तो क्या-क्या न होता, मानव और पशु किन नियामतों से वंचित रह जाते, इसकी एक बानगी यह निबंध बखूबी दर्शाता है। कीचड़ हेय नहीं श्रद्धेय है, यह लेखक ही नहीं पाठक भी स्वीकारता है।

कीचड़ का काव्य

आज सुबह पूर्व में कुछ खास आकर्षक नहीं था। रंग की सारी शोभा उत्तर में जमी थी। उस दिशा में तो लाल रंग ने आज कमाल ही कर दिया था। परंतु बहुत ही थोड़े से समय के लिए। स्वयं पूर्व दिशा ही जहाँ पूरी रँगी न गई हो, वहाँ उत्तर दिशा कर-करके भी कितने नखरे कर सकती? देखते-देखते वहाँ के बादल श्वेत पूनी जैसे हो गए और यथाक्रम दिन का आरंभ ही हो गया।

हम आकाश का वर्णन करते हैं, पृथ्वी का वर्णन करते हैं, जलाशयों का वर्णन करते हैं। पर कीचड़ का वर्णन कभी किसी ने किया है? कीचड़ में पैर डालना कोई पसंद नहीं करता, कीचड़ से शरीर गंदा होता है, कपड़े मैले हो जाते हैं। अपने शरीर पर कीचड़ उड़े यह किसी को भी अच्छा नहीं लगता और इसीलिए कीचड़ के लिए किसी को सहानुभूति नहीं होती। यह सब यथार्थ है। किंतु तटस्थता से सोचें तो हम देखेंगे कि कीचड़ में कुछ कम सौंदर्य नहीं है। पहले तो यह कि कीचड़ का रंग बहुत सुंदर है। पुस्तकों के गत्तों पर, घरों की दीवालों पर अथवा शरीर पर के कीमती कपड़ों के लिए हम सब कीचड़ के जैसे रंग पसंद करते हैं। कलाभिज्ञ लोगों को भट्ठी में पकाए हुए मिट्टी के बरतनों के लिए यही रंग बहुत पसंद है। फोटो लेते समय भी यदि उसमें कीचड़ का, एकाध ठीकरे का रंग आ जाए तो उसे वार्मटोन कहकर विज्ञ लोग खुश-खुश हो जाते हैं। पर लो, कीचड़ का नाम लेते ही सब बिगड़ जाता है।

नदी के किनारे जब कीचड़ सूखकर उसके टुकड़े हो जाते हैं, तब वे कितने सुंदर दिखते हैं। ज़्यादा गरमी से जब उन्हीं टुकड़ों में दरारें पड़ती हैं और वे टेढ़े हो जाते हैं, तब सुखाए हुए खोपरे जैसे दीख पड़ते हैं। नदी किनारे मीलों तक जब समतल और

चिकना कीचड़ एक-सा फैला हुआ होता है, तब वह दृश्य कुछ कम खूबसूरत नहीं होता। इस कीचड़ का पृष्ठ भाग कुछ सूख जाने पर उस पर बगुले और अन्य छोटे-बड़े पक्षी चलते हैं, तब तीन नाखून आगे और अँगूठा पीछे ऐसे उनके पदचिह्न, मध्य एशिया के रास्ते की तरह दूर-दूर तक अंकित देख इसी रास्ते अपना कारवाँ ले जाने की इच्छा हमें होती है।

फिर जब कीचड़ ज़्यादा सूखकर ज़मीन ठोस हो जाए, तब गाय, बैल, पाड़े, भैंस, भेड़, बकरे इत्यादि के पदचिह्न उस पर अंकित होते हैं उसकी शोभा और ही है। और फिर जब दो मदमस्त पाड़े अपने सींगों से कीचड़ को रौंदकर आपस में लड़ते हैं तब नदी किनारे अंकित पदचिह्न और सींगों के चिह्नों से मानो महिषकुल के भारतीय युद्ध का पूरा इतिहास ही इस कर्दम लेख में लिखा हो—ऐसा भास होता है।

कीचड़ देखना हो तो गंगा के किनारे या सिंधु के किनारे और इतने से तृप्ति न हो तो सीधे खंभात पहुँचना चाहिए। वहाँ मही नदी के मुख से आगे जहाँ तक नज़र पहुँचे वहाँ तक सर्वत्र सनातन कीचड़ ही देखने को मिलेगा। इस कीचड़ में हाथी डूब जाएँगे ऐसा कहना, न शोभा दे ऐसी अल्पोक्ति करने जैसा है। पहाड़ के पहाड़ उसमें लुप्त हो जाएँगे ऐसा कहना चाहिए।

हमारा अन्न कीचड़ में से ही पैदा होता है इसका जाग्रत भान यदि हर एक मनुष्य को होता तो वह कभी कीचड़ का तिरस्कार न करता। एक अजीब बात तो देखिए। पंक शब्द घृणास्पद लगता है, जबकि पंकज शब्द सुनते ही कवि लोग डोलने और गाने लगते हैं। मल बिलकुल मलिन माना जाता है किंतु कमल शब्द सुनते ही चित्त में प्रसन्नता और आह्लादकत्व फूट पड़ते हैं। कवियों की ऐसी युक्तिशून्य वृत्ति उनके सामने हम रखें तो वे कहेंगे कि "आप वासुदेव की पूजा करते हैं इसलिए वसुदेव को तो नहीं पूजते, हीरे का भारी मूल्य देते

हैं किंतु कोयले या पत्थर का नहीं देते और मोती को कंठ में बाँधकर फिरते हैं किंतु उसकी मातुश्री को गले में नहीं बाँधते!" कम-से-कम इस विषय पर कवियों के साथ तो चर्चा न करना ही उत्तम!

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए–

1. रंग की शोभा ने क्या कर दिया?
2. बादल किसकी तरह हो गए थे?
3. लोग किन-किन चीज़ों का वर्णन करते हैं?
4. कीचड़ से क्या होता है?
5. कीचड़ जैसा रंग कौन लोग पसंद करते हैं?
6. नदी के किनारे कीचड़ कब सुंदर दिखता है?
7. कीचड़ कहाँ सुंदर लगता है?
8. 'पंक' और 'पंकज' शब्द में क्या अंतर है?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए–

1. कीचड़ के प्रति किसी को सहानुभूति क्यों नहीं होती?
2. ज़मीन ठोस होने पर उस पर किनके पदचिह्न अंकित होते हैं?
3. मनुष्य को क्या भान होता जिससे वह कीचड़ का तिरस्कार न करता?
4. पहाड़ लुप्त कर देनेवाले कीचड़ की क्या विशेषता है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए–

1. कीचड़ का रंग किन-किन लोगों को खुश करता है?
2. कीचड़ सूखकर किस प्रकार के दृश्य उपस्थित करता है?
3. सूखे हुए कीचड़ का सौंदर्य किन स्थानों पर दिखाई देता है?
4. कवियों की धारणा को लेखक ने युक्तिशून्य क्यों कहा है?

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए–

1. नदी किनारे अंकित पदचिह्न और सींगों के चिह्नों से मानो महिषकुल के भारतीय युद्ध का पूरा इतिहास ही इस कर्दम लेख में लिखा हो ऐसा भास होता है।
2. "आप वासुदेव की पूजा करते हैं इसलिए वसुदेव को तो नहीं पूजते, हीरे का भारी मूल्य देते हैं किंतु कोयले या पत्थर का नहीं देते और मोती को कंठ में बाँधकर फिरते हैं किंतु उसकी मातुश्री को गले में नहीं बाँधते!" कम-से-कम इस विषय पर कवियों के साथ तो चर्चा न करना ही उत्तम!

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

जलाशय	....	....	....
सिंधु	....	....	....
पंकज	....	....	....
पृथ्वी	....	....	....
आकाश	....	....	....

2. निम्नलिखित वाक्यों में कारकों को रेखांकित कर उनके नाम भी लिखिए–

(क) कीचड़ का नाम लेते ही सब बिगड़ जाता है। ....

(ख) क्या कीचड़ का वर्णन कभी किसी ने किया है। ....

(ग) हमारा अन्न कीचड़ से ही पैदा होता है। ....

(घ) पदचिह्न उस पर अंकित होते हैं। ....

(ङ) आप वासुदेव की पूजा करते हैं। ....

3. निम्नलिखित शब्दों की बनावट को ध्यान से देखिए और इनका पाठ से भिन्न किसी नए प्रसंग में वाक्य प्रयोग कीजिए–

आकर्षक	यथार्थ	तटस्थता	कलाभिज्ञ	पदचिह्न
अंकित	तृप्ति	सनातन	लुप्त	जाग्रत
घृणास्पद	युक्तिशून्य	वृत्ति		

4. नीचे दी गई संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग करते हुए कोई अन्य वाक्य बनाइए–

(क) <u>देखते-देखते</u> वहाँ के बादल श्वेत पूनी जैसे हो गए।

....

(ख) कीचड़ देखना हो तो सीधे खंभात पहुँचना चाहिए।

....

(ग) हमारा अन्न कीचड़ में से ही पैदा होता है।

....

6. न, नहीं, मत का सही प्रयोग रिक्त स्थानों पर कीजिए–

(क) तुम घर .... जाओ।

(ख) मोहन कल .... आएगा।

(ग) उसे .... जाने क्या हो गया है?

(घ) डाँटो .... प्यार से कहो।

(ङ) मैं वहाँ कभी .... जाऊँगा।

(च) .... वह बोला .... मैं।

योग्यता-विस्तार

1. विद्यार्थी सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य देखें तथा अपने अनुभवों को लिखें।
2. कीचड़ में पैदा होनवाली फसलों के नाम लिखिए।
3. भारत के मानचित्र में दिखाएँ कि धान की फसल प्रमुख रूप से किन-किन प्रांतों में उपजाई जाती है?
4. क्या कीचड़ 'गंदगी' है? इस विषय पर अपनी कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

पूर्व	–	पूर्व दिशा
आकर्षक	–	सुंदर, रोचक
शोभा	–	सुंदरता
उत्तर	–	उत्तर दिशा, जवाब
कमाल	–	अद्‌भुत चमत्कारिक कार्य
नखरे	–	बेवजह का हाव-भाव दिखलाना
पूनी	–	धुनी हुई रुई की बड़ी बत्ती जो सूत कातने के लिए बनाई जाती है
जलाशय	–	तालाब, सरोवर
कीचड़	–	पैरों में चिपकने वाली गीली मिट्टी, पंक
तटस्थता	–	निरपेक्ष, उदासीनता, किसी का पक्ष न लेना, निष्पक्षता

कलाभिज्ञ	-	कला के जानकार
ठीकरा	-	खपड़े का टुकड़ा
विज्ञ	-	जानकार
खुश-खुश	-	बहुत खुश होने के लिए पुरानी हिंदी में प्रयुक्त होने वाला शब्द
खोपरा (खोपड़ा)	-	नारियल, गरी का गोला
समतल	-	जिसका तल या सतह बराबर हो
अंकित	-	चिह्नित
कारवाँ	-	देशांतर जाने वाले यात्रियों/व्यापारियों का झुंड
मदमस्त	-	मतवाला, मस्त
पाड़े	-	भैंस के नर बच्चे
महिषकुल	-	भैंसों का परिवार
कर्दम	-	कीचड़
भास	-	प्रतीत, आभास, कल्पना, चमक
अल्पोक्ति	-	थोड़ा कहना
तिरस्कार	-	उपेक्षा
आह्लादकत्व	-	हर्ष का भाव
युक्तिशून्य	-	तर्क शून्य, विचारहीन
वृत्ति	-	तरीका, ढंग, स्वभाव, कार्य